International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

निर्मल वर्मा के चिंतन और साहित्य के विशिष्ट संदर्भ और सरोकार

- **डा. रिम्पी खिल्लन सिंह**

निर्मल वर्मा हिंदी के उन विरले कथाकारों में से हैं जिन्होंने हिंदी गद्य साहित्य को एक नयी ऊंचाई प्रदान की | उनके लेखन में भाषा का नया तेवर और गद्य का नया रूप और संस्कार देखने को मिलता है| उनके चिंतन और साहित्य दोनों में ही स्मृति और इतिहास के तत्व अत्यंत संश्लिष्ट स्तर पर विद्यमान हैं | उनकी कहानियों में आज़ादी के बाद का बदलता मध्यवर्ग और उनका जीवन किसी न किसी रूप में उपस्थित है | उनके द्वारा दिए गये एक साक्षात्कार में निर्मल कहते हैं "मैं कहना चाहूँगा कि मेरी अनेक कहानियाँ भारतीय मध्यवर्गीय वातावरण को प्रतिबिंबित करती हैं और कुछ मौन हमारे समाज के मध्यवर्ग की अव्यक्त अन्तर्व्यथा जो पश्चिम के शब्दाभिमुख समाज में शब्दो में व्यक्त होती है, भारतीय संदर्भ में घुटकर रह जाती है |" [1] निर्मल के यहाँ यह घुटन भी बहुत बार शब्दों के बीच के मौन द्वारा अभिव्यक्त हुई है | उनके पात्र भारतीय होते हुए भी किसी विशेष राष्ट्र या संस्कृति से संबंधित नहीं हैं | वे किसी भी देश और समुदाय के हो सकते हैं | उनकी कहानियाँ मानवीय संबंधों के भीतर नये दायरे तलाश करती कहानियाँ हैं |

नामवर सिंह उनकी कहानी "परिन्दे" को नयी कहानी आंदोलन की पहली कहानी मानते हैं |परन्तु निर्मल वर्मा का यह मानना रहा कि "उन दिनों मैं बस अपने लेखन पर ध्यान देता था, नयी कहानी आंदोलन पर लिखे जा रहे घोषणा पत्रों पर नहीं | इसके अलावा मैं इस आंदोलन को, अगर वह आंदोलन था तो नयी कहानी भी कहना ठीक नहीं समझता | साहित्य में नये का अर्थ हो ता है- पुराने रूप, पुरानी प्रक्रिया तथा पुराने ढांचे में आमूल चूल परिवर्तन | जैसे कि फ्रेंच साहित्य में नया उपन्यास आंदोलन हुआ |" [2]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

निर्मल वर्मा ने किसी भी घोषणापत्र या विचारधारा से अधिक अनुभव की प्रामाणिकता पर बल दिया | उन्होंने इतिहास के दबाव को मानने से इंकार करते हुए स्मृति को अपनी रचनात्मक दुनिया बनाने का माध्यम बनाया | उनकी कहानियाँ स्मृतियों के इसी ताने बाने से रची गयी हैं | वे स्मृतियों का प्रयोग हिम कुदाल की तरह अपने भीतर की सतहों को तोड़ने के लिए करते हैं | वे अपने जीवन में कई विचारधाराओं से प्रभावित हुए | अंत में उनके बारे में आलोचकों ने यह भी लिखा कि निर्मल वर्मा हिंदुत्व की भाषा बोलते हैं परन्तु निर्मल वर्मा को इन सबसे इतना फर्क नहीं पड़ा क्योंकि उनके लेखन की ज़मीन विचारधाराओं की बंद गलियों से आगे शुरू होती थी |

वे जानते थे कि इतिहास विजेता के लिए लिखा जाता है और इतिहास से अधिक इतिहास दृष्टि महत्वपूर्ण होती है | उनके चिंतन में इतिहास और इतिहास बोध को लेकर जितनी अधिक स्पष्टता मिलती है, वह किसी और रचनाकार में उतनी दिखाई नहीं देती | वे स्मृति से भी आगे सामूहिक स्मृति की चर्चा करते हैं जिसका ह्रास आधुनिकता की प्रक्रिया के जटिल होते चले जाने के साथ साथ हुआ है | यह बहुत बड़ी विडंबना है कि निर्मल वर्मा आधुनिकता की विडंबनाओं को जितना अधिक अपनी कहानियों में लिखते रहे उतना ही उन्हें आधुनिक और अभिजात्य लेखन से जोड़ा जाता गया और उनके लेखन का ठीक तरह से मूल्यांकन बाद में अशोक वाजपेयी, रमेशचंद्र शाह और मलयज जैसे आलोचकों ने किया |

उन्होंने हमेशा भारतीयता के तत्वों को अपने चिंतन में महत्व दिया | उन पर अक्सर यह भी आरोप लगता रहा कि उनकी रचनाओं में एक विचित्र विरक्ति भाव है और एक अकेलापन लगातार दिखाई देता है जिसके बारे में निर्मल वर्मा का मानना है कि यह अकेलापन हवा में पैदा हुआ अकेलापन पन नहीं है, इसके भी अपने ठोस संदर्भ हैं | उनकी सभी कहानियों का एक ही उभयनिष्ठ बिंदु है और वह है स्मृति जैसा कि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नामवर सिंह भी मानते हैं | उनकी कहानियों, उपन्यासों और उनके यात्रा वृतान्तों सबमें स्मृति का यह तत्व मौजूद है | "चीज़ों पर चाँदनी " में निर्मल वर्मा लिखते हैं कि "अरसे बाद अपने इन स्मृति खंडों को दोबारा पढ़ते हुए मुझे एक अजीब सा सूनापन अनुभव होता रहा है |" [3] उनके यहाँ चीजों को देखने का अर्थ है उन्हें नये सिरे से छूना और समझने की कोशिश करना | स्मृतियाँ उन्हें चीज़ों को नये तरीके से समझने में मदद करती हैं | मलयज ने निर्मल वर्मा के बारे में लिखा है "अतीत वह जादू है जो स्मृति बनकर उनपर छाया हुआ है, वर्तमान उन्हें अपनी तरफ खींचता है क्योंकि उसी में संभावना है | तनाव वे दोनों का महसूस करते हैं | वर्तमान के प्रति ललक उनमें है पर आधे मन की या शायद आधे से भी कम मन की |वर्तमान का खुलापन उनकी दृष्टि में अटकता है, कहीं भीतर बंधता भी है पर इससे ज़्यादा नहीं | स्मृति का पलड़ा ज़्यादा भारी है | हकीकत यह है कि रचना निर्मल वर्मा के लिए स्मृति में ही है | स्मृति में हर बार कुछ न कुछ छूट जाता है | समय बोध के जाल से छूट कर गिरे क्षणों जैसा और यह कुछ छूटा हुआ ही उन्हें बार बार रचने को प्रेरित करता है |"[4]

स्मृतियों की यही पूंजी निर्मल वर्मा के साहित्य को ऐसा साहित्य बनाती है जो बीते हुए, खोए हुए, छूटे हुए क्षणों को कुछ देर के लिए फिर से पा लेने का एहसास दिलाता है | दर असल स्मृति ही अनुभव को बुलाती है और उसे रचना में बदलती है और फिर वही रचना तब मिथ की सार्वभौमिकता ग्रहण कर पाती है जब अपने व्यक्तिगत अकेले अनुभव को एक ऐसी स्मृति में बदलने का संघर्ष किया जाता है जिसमें सबका साझा है, जो अदृश्य होते हुए भी सबकी चीज़ है | दर असल निर्मल वर्मा इतिहास और मिथक, समय और शाश्वत को बाँटने में विश्वास नहीं करते |

इसलिए निर्मल वर्मा की दृष्टि एक भारतीय की दृष्टि है जो पश्चिम की तरह समय का बंटवारा नहीं करता | वे निर्मल वर्मा जिन पर बाहरी और पश्चिमी तरीके का लेखक होने का आरोप लगता रहा, उनके बारे में डा.नित्यानंद तिवारी लिखते हैं, "संबंध का अवमूल्यन करने वाला सन्यास चित्त भारतीय लेखक का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जातीय व्यक्तित्व है और इसे अर्जित कर लेने पर भारतीय लेखक पश्चिम से प्रभावित हो सकता है और उसे प्रभावित कर सकता है |"[5] इस प्रकार उनके कथा साहित्य में आने वाले आंतरिक किसी एकांत को त्रासदी पूर्ण नहीं अपितु गौरवपूर्ण मानना चाहिए |

निर्मल वर्मा के उपन्यासों और कहानियों के पात्रों में भी जो अकेलापन दिखाई देता है वह अकेलापन ऐसा नहीं है जो भीड़ के बीच अकेले होने से उभरता है | दर असल अपनी नियति के अंधकार में, जहाँ तमाम तरह से लौकिक उपस्थितियों, संबंधों से परे होकर मनुष्य अपने को खोजने, पाने और खो देने का विवशता भरा संघर्ष करता है वहाँ पर वह सचमुच अकेला होता है | "परिंदे " के सभी पात्र अपनी अपनी स्मृतियों के साथ अकेले हैं और चाहकर भी एक दूसरे के अकेले पन को दूर नहीं कर सकते | निर्मल वर्मा का उपन्यास "लाल टीन की छत" सिर्फ एक अकेली लड़की की ही कहानी नहीं है अपितु एक खास ढंग और विशिष्ट कारणों से अकेली पड़ गयी लड़की की भी कहानी है | इसलिए उसके पात्र और परिवेश, पात्र और परिवेश उतने नहीं हैं जितने कि उस संवेदना को सहारा देने वाले और वहन करने वाले प्रतीक और बिंब | इन प्रतीकों और बिंबों को निर्मल स्मृति के सहारे बुनते हैं - "अंधेरे बंद कमरों की भूलभुलैया में भटकती कुछ अभिशप्त पात्रों की नियति, छोटू, काया, मिस जोसुआ, बीरनलामा, मंगत जो वहाँ विचित्र सा भ्रम है, वह इस उपन्यास के अनुभव संसार की वास्तविकता है |" [6]

उनकी भाषा चीजों को याद करते हुए और याद करके लिखते हुए लेखक की भाषा है | इसलिए उनकी भाषा में एक ठहराव, एक चेतना और अन्तर्दृष्टि का भाव हमेशा मौजूद रहता है | उनकी भाषा स्मृतियों के अनेक बिंब और चित्र रचती है | कभी कभी वह चित्र गत्यात्मक होते हैं और कभी कभी स्थिर | उदहारण के लिए एक गत्यात्मक चित्र लेते हैं "किंतु कुछ ही देर में हवा में फड़फड़ाते इन चिथड़ों को अंधेरे ने निगल लिया | मोटर रोड के दायीं ओर प्रीस्ट हाऊस की ढलुआ छत के ऊपर हँसिया चाँद उग आया है | किंतु दूर पहाड़ियों पर धूप अभी तक रेंग रही है |"[7] चेखव की कहानियों की तरह इनकी कहानियों में भी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अर्थों की अनुगूँजें सुनाई पड़ती हैं इसलिए अशोक वाजपेयी मानते हैं कि "निर्मल वर्मा अर्थों के बखान के नहीं अपितु अर्थों की अनुगूँजों के कथाकार हैं |" [8]

निर्मल वर्मा तेज़ी से बदलती चीज़ों से न तो जल्दी ही आक्रान्त होते हैं और न ही अभिभूत होते हैं | बल्कि वे जो बदलता है और बदलने के संकेत देने के बावजूद नहीं बदलता उन सबको अपनी रचना के ताने बाने में बुनते हैं इसलिए उनका चिंतन भी उनके उपन्यासों और कहानियों में अलग से हस्तक्षेप नहीं करता अपितु वह उनकी रचना प्रक्रिया में एक रसायन की भांति घुला मिला है इसलिए उनके गद्य को पढ़कर लगता है कि वह आत्मा का गद्य है | श्री ध्रुव शुक्ल के शब्दों में "आधुनिक मनुष्य के आत्म का नया छंद |" [9]

निर्मल वर्मा न केवल एक लेखक के तौर पर अपितु एक संवेदनशील व्यक्ति के तौर पर भी यह महसूस करते हैं कि वादे और आदर्शों से मनुष्य को मुक्ति नहीं मिल सकती, उसकी मुक्ति केवल कला के माध्यम से ही संभव है और कुछ भी रचने के लिए कलाकार को अपने पास लौटना ही पड़ता है | जितना ही अधिक लेखक ऐसा कर पाता है उतना ही उसका अनुभव और भी परिचित, आत्मीय और गहरा होता चला जाता है, उसके ऊपर की धूल और मिट्टी झड़ती चली जाती है और रचना अपनी मूल संवेदना के और अधिक निकट आती चली जाती है | निर्मल वर्मा की अधिकांश रचनाओं के साथ ऐसा ही होता है | इसलिए उनका रचना संसार, उनकी हर एक रचना के साथ और अधिक उत्कृष्ट और सघन होता चला गया है |

स्मृति और इतिहास उनके साहित्य में केन्द्रीय रचनात्मक इकाइयां हैं | यह रचनात्मक इकाइयां उनके चिंतन और साहित्य दोनों में सघनता पैदा करती हैं और उनका सर्जक मन केवल शब्द ही नहीं रचता अपितु शब्दों के बीच के मौन में भी उनकी रचना को पढ़ा जा सकता है | यह मौन बहुत कुछ कहता है और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अनुभूतियों का एक व्योम रच देता है जिस व्योम में स्मृतियाँ बादलों के टुकड़ों की तरह तैरती रहती हैं| उनकी भाषा निरन्तर चीजों पर नज़र बनाये रखती हैं और स्वयं के पास लौटने की प्रक्रिया में सबसे बड़े मानवीय मूल्यों - मानव मुक्ति को परिभाषित करती है|

संदर्भ सूची :

1. संसार में निर्मल वर्मा, संपादक गगन गिल, पृ41
2. संसार में निर्मल वर्मा, संपादक गगन गिल, पृ 24
3. चीड़ों पर चाँदनी निर्मल वर्मा, पृ28
4. स्मृति में बंद रचना, मलयज, पूर्वाग्रह पत्रिका में लेख
5. निर्मल वर्मा सृजन और चिंतन, प्रो़. नित्यानंद तिवारी, पूर्वाग्रह पत्रिका अंक 1997
6. बीच बहस में, लालटीन की छत, रमेशचन्द्र शाह, पूर्वाग्रह, अंक 1997
7. चीड़ों पर चाँदनी, निर्मल वर्मा, पृ 135
8. राग विराग की गोधूलि का गल्प, पूर्वाग्रह अंक 1997
9. आधुनिक मनुष्य की आत्मा का नया छंद, ध्रुव शुक्ल द्वारा लिखा लेख, पूर्वाग्रह, 1997

डा. रिम्पी खिल्लन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय
सिविल लाइन्स, दिल्ली 54
Email : Rimpi.Khillan@gmail.com